लॉकडाउन से अनलॉक तक | असरदार वर्कशीट

लोविस साइमन

"दीदी, केन्द्र कब खुलेगा?" बैरसिया ब्लॉक, भोपाल के गुनगा गाँव के तीन-चार बच्चों ने मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (एम-एलएसी)* के एक संचालक (समुदाय से चुने गए सहयोगकर्ता) से पूछा। यह एकलव्य के *शिक्षा की उड़ान* प्रोजेक्ट का हिस्सा था जिसमें हमने संचालकों के ज़रिए घर-घर जाकर बच्चों को वर्कशीट पहुँचाईं। हमने इससे पहले यह कभी नहीं किया था। यह जून की बात है, लॉकडाउन हुए दो महीने हो चुके थे पर राज्य शिक्षा केन्द्र की तरफ़ से कोई सर्कुलर नहीं भेजा गया था और इस कारण हमारी टीम के सभी सदस्य चिन्तित थे। हम बच्चों को अपने एम-एलएसी में इकट्ठा नहीं करना चाह रहे थे, इसलिए हमने इन संचालकों के ज़रिए उनके साथ काम करना शुरू किया। ये संचालक घर-घर जाकर हर बच्चे से बातचीत करते। हमने इन वर्कशीटों को सीखने के तीन स्तरों के लिए तैयार किया था — अंकुर (शुरुआती), तरुण (मध्यम स्तरीय) और उमंग (उच्च स्तरीय)।

कोविड–19 महामारी का दौर वाक़ई ऐसा समय था जब हमारी ज़िन्दगी की चहल-पहल थम गई और हम अपने सामाजिक जीवन के सभी पहलुओं में बदलाव करने को मजबूर हो गए। स्कूल का एक और अकादमिक साल ख़त्म होने के साथ हम सभी को यह समझ आया कि व्यावहारिक गतिविधियों के साथ रूबरू किए जाने वाले संवाद का कोई विकल्प नहीं है, ख़ासकर उन बच्चों के लिए जिनके पास तकनीकी पहुँच नहीं है। सामान्य रूप से और ख़ासकर शिक्षा के क्षेत्र में, दूसरे व्यक्तियों के साथ रूबरू होने वाले मेलजोल व संवाद के अभाव में बच्चों को न सिर्फ़ पढ़ाई-लिखाई बल्कि सामाजिक और भावनात्मक तौर पर भी नुक़सान हुआ है। बच्चों को अपने 'सामाजिक संवाद के केन्द्र' (उनके स्कूल) से वंचित कर दिया गया है, जहाँ वे दोस्त बनाते थे, आपस में लड़ते-झगड़ते और बहस करते थे, साथ मिलकर खेलते थे और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ करते थे। और शिक्षकों को, जिन्हें स्कूल में हर बच्चे की ख़ूबियाँ और कमज़ोरियाँ जानने का मौक़ा मिल सकता था, उन्हें सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आगे ले जाने के लिए अलग कार्य पद्धतियाँ सोचनी पड़ीं।

एक तरीक़ा जो आज़माया गया वह वर्कशीट का था। यह मॉडल शिक्षकों के लिए बच्चों के सीखने के स्तरों को समझने का एक तरीक़ा बन गया है।

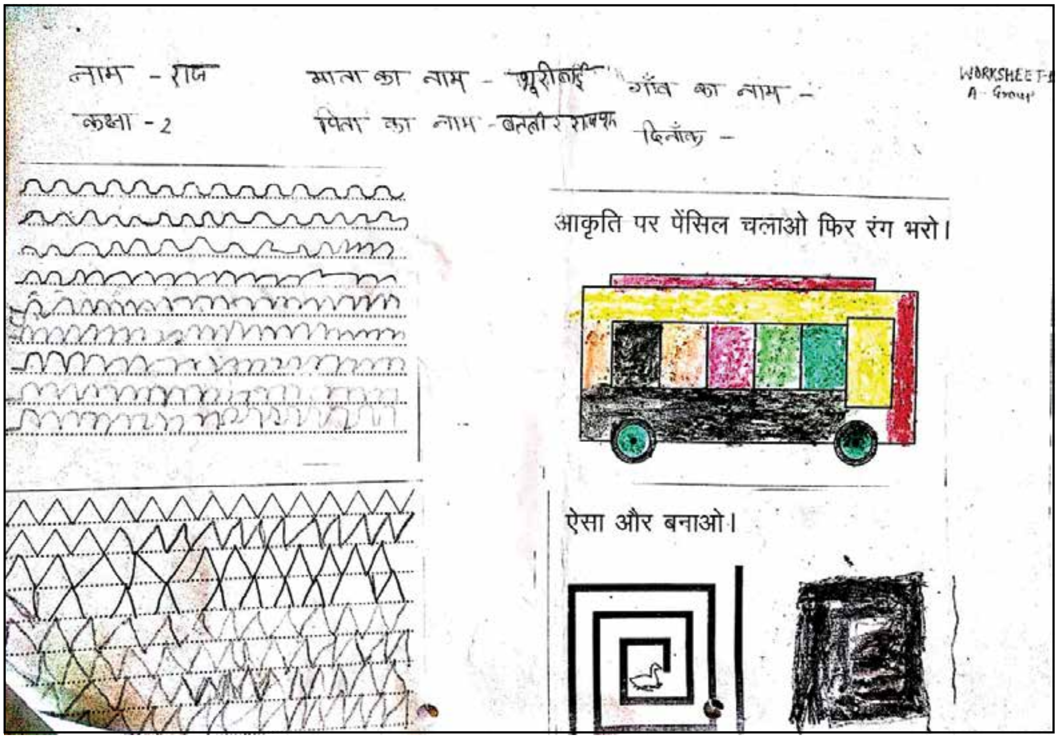
अब हम इस प्रयास को इसलिए भी देख रहे हैं कि इससे हमें बच्चों के सीखने के फ़ासलों को समझने में और स्कूल फिर से खुलने की स्थिति के लिए उनकी तैयारी कराने में मदद मिले। भले ही *कोविड-19* ने हम सभी को बहुत गम्भीर तरीक़ों से प्रभावित किया है पर हमें अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी के बारे में फिर से सोचने का मौक़ा भी दिया है। लॉकडाउन के वक़्त ऐसे बहुत सारे माता-पिता को अपने बच्चों के साथ काफ़ी वक़्त बिताने को मिला जो इससे पहले अपने कामकाज में पूरी तरह व्यस्त रहते थे। शिक्षकों को भी बच्चों के साथ काम के दौरान इस्तेमाल की जा सकने वाली कार्य योजनाओं पर सोचने का कुछ समय मिला। यह प्रक्रिया शायद तब न हो पाती अगर वे निरन्तर पाठ्यपुस्तक के पाठों को पूरा करने की चिन्ता में डूबे रहते। यह मौक़ा था कि वे कुछ नया और अलग करने की कोशिश कर सकें।

चूँकि हम सभी जानते है कि *कोविड-19* अभी जल्दी तो कही नहीं जाने वाला तो इस 'वर्कशीट मॉडल' को स्कूलों और घरों में भी समन्वित किया जा सकता है। यह बहुत ज़रूरी है कि शिक्षकों से इस प्रयास के बारे में बात की जाए ताकि स्कूलों के फिर से खुलने के लिए हमारी तैयारियों में इसे भी जोड़ा जा सके। स्कूलों के पुनः खुलने पर यह ज़रूरी होगा कि हम लचीले तरीक़ों से काम करें।

एक अन्य दृष्टिकोण जिसको *कोविड-19* ने उभारा है, वह यह है कि बच्चे अलग-अलग सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से आते हैं। उदाहरण के लिए, एक शहरी मध्यम वर्गीय घर के बच्चे को अपने परिवार और समुदाय से तकनीक तक पहुँच के साथ-साथ अन्तर्वैयक्तिक व अन्तःवैयक्तिक सम्बन्ध निर्माण, समस्या-समाधान, रचनात्मक सोच जैसे कौशलों से समबद्ध सहयोग मिलने की काफ़ी सम्भावना रहती है। वहीं दिहाड़ी पर काम करने वाले या किसान परिवार के बच्चे (जैसे कि बैरसिया ब्लॉक) में जीवन के कौशल तो होंगे पर हो सकता है उसके पास उस तरह का सामाजिक-सांस्कृतिक सहयोग न हो। एम-एलएसी में किया जा रहा वर्कशीटों का प्रयोग बच्चों को इनमें से कुछ कौशल सीखने में मदद करने के लिए एक पूरक भूमिका निभा सकता है।

अनलॉक की तैयारी

लॉकडाउन के दौरान वर्कशीटों के इस्तेमाल से हमें यह



यह वर्कशीट अंकुर समूह के लिए बनाई गई थी जो पेशीय कौशलों के निर्माण पर केन्द्रित थी।

अहसास हुआ कि बच्चों के सीखने के लिए यह एक असरदार तरीक़ा है जो उनके सीखने की प्रक्रिया को सहारा देता है। वर्कशीट मॉडल के हस्तक्षेप ने माता-पिता को भी अपने बच्चों की पढ़ाई में शामिल होने का दबाव बनाया। जैसा कि पहले बताया गया है, बच्चों ने पढ़ाई का बेहद ज़रूरी वक़्त गँवाया है और शिक्षक यह नहीं जानते हैं कि बच्चों के सीखने के स्तरों में क्या बदलाव आए हैं। बच्चों को इस तरह की अलग-अलग स्तरों की वर्कशीटों से मदद मिल सकती है। वे छोटे समूहों में और एक-दूसरे की सहायता से इन पर काम कर सकते हैं। शिक्षक इन वर्कशीटों के ज़रिए बच्चों को उनकी पिछली कक्षाओं में सीखी गई बातों को धीरे-धीरे याद कराने में मदद कर सकते हैं।

मध्य प्रदेश में 1 सितम्बर को फिर से स्कूल खुलने पर शिक्षक बच्चों के साथ समूहों में काम कर पाए और वर्कशीटों की मदद से पिछली कक्षाओं की ऐसी बातों को याद कराने में उनकी मदद कर पाए जिन्हें वे भूल गए थे। ऐसा करते हुए बच्चों को अगले स्तर की चीज़ें सीखने में असहजता महसूस नहीं हुई। इसलिए वर्कशीट सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मूल्यांकन का एक साधन देने के साथ-साथ यह बच्चों को अभ्यास के अनेक मौक़े देती है और उन्हें नई चीज़ें सीखने में आसानी होती है। यहाँ पर ज़ोर इस बात पर है कि स्कूल लौटने पर बच्चे सीखने में सहजता महसूस करें।

कुछ अनुभव

शासकीय माध्यमिक स्कूल, हिरणखेड़ी (बैरसिया, भोपाल) में बच्चों से बातें करते हुए मैंने पूछा कि उन्हें डेढ़ साल बाद स्कूल आकर कैसा लगा और इस लम्बे दौर में उन्होंने क्या किया। कुछ बच्चों ने बताया कि वे तो घर पर ही थे, कुछ अपने दादा-दादी, नाना-नानी के घर गए तो कुछ रिश्तेदारों के घर। एक बच्चे ने बताया कि वह अपने परिवार के साथ भोपाल स्थित वन विहार और भीमबेटका घूमने गया था। चूँकि इस कक्षा के सारे बच्चों से मैं पहली बार मिल रही थी तो अपनी बातचीत को हमने इस बात से आगे बढ़ाया कि अँग्रेज़ी में अपना परिचय कैसे देते हैं। मैंने उन्हें अपना-अपना नाम एक काग़ज़ के टुकड़े पर लिखने को कहा और उन्हें ख़ुद का उदाहरण दिया : My name is Lovis, I come from Bhopal. बच्चों ने इसी तरह अपना-अपना परिचय दिया : My name is ... I come from Hirankhedi village. इसके साथ ही, उन्होंने अपनी पसन्द की एक चीज़ भी बताई। मैंने इसके साथ एक और अभ्यास भी करवाया जिसमें बच्चों को पहला अक्षर और उसकी ध्वनि पहचाननी थी। हमने एक-दूसरे का नाम लेकर इस अभ्यास को आगे बढ़ाया। जैसे-जैसे बच्चों ने अपनी पसन्दीदा चीज़ें बताईं मैं उन शब्दों को ब्लैकबोर्ड पर लिखती गई।

शासकीय माध्यमिक स्कूल, हर्राखेड़ा (बैरसिया, भोपाल) में मैंने बच्चों से बातचीत की शुरुआत यह पूछ कर की कि वे इतने महीनों तक क्या कर रहे थे। बच्चों ने बताया कि वे मोबाइल फ़ोन पर गेम खेलते थे, घर के कामकाज में मदद करवाते थे और अपने दोस्तों के साथ साइकिल चलाने जाते थे। फिर मैंने कक्षा को समूहों में बाँटकर उनके साथ चित्रों को पढ़ने की

गतिविधि की। मैंने हर समूह को एक चित्र कथा की क़िताब के साथ एक चार्ट पेपर दिया और उनसे एक चित्र चुनकर उसके बारे में ये बातें लिखने को कहा — चित्र में कौन-कौन हैं? उसमें जो भी हो रहा है वह क्यों और कहाँ हो रहा है? प्रत्येक समूह से दो सदस्यों को कक्षा के सामने इसे प्रस्तुत करना था।

ये दोनों ही सुनने, बोलने और लिखने वाली वर्कशीट गतिविधियाँ थी जिनमें बच्चों को बिना डरे और बिना यह सोचे बोलने का मौक़ा दिया गया कि कोई उनके बारे में क्या राय बनाएगा। इसी से जुड़ी हुई एक गतिविधि यह भी हो सकती है कि बच्चे उस जगह से जुड़े चित्र बनाएँ या एक पैराग्राफ़ लिखें जहाँ वे घूमने गए हों। दूसरा विकल्प हो सकता है कि वे अपनी कॉपियों में हमारी चर्चा के दौरान सामने आए ऐसे पाँच-दस शब्द लिखें जो उन्हें पसन्द आए हों। बच्चों की यह रचनाएँ कक्षा की दीवारों पर चिपकाई जा सकती हैं। स्कूल वापस खुलने पर शिक्षकों को ऐसी गतिविधियों के माध्यम से बच्चों से बातचीत करनी होगी और सुनिश्चित करना होगा कि वे मस्ती और मज़े करते हुए सीख रहे हों। फिर धीरे-धीरे समय के साथ सीखने की चुनौती को बढ़ाना चाहिए। बाद में वर्कशीट की गतिविधियाँ पाठ्यपुस्तक से सीखने-सिखाने के दायरे तक भी जा सकती हैं।



लॉकडाउन की तैयारी

समीर की दादी ने परिवार को खाने का ज़रूरी सामान जमा करके रखने को कहा। तुम्हें क्या लगता है उन्होंने ऐसा क्यों कहा होगा?

उन्होंने ऐसा इसलिए कहा कि ....

....

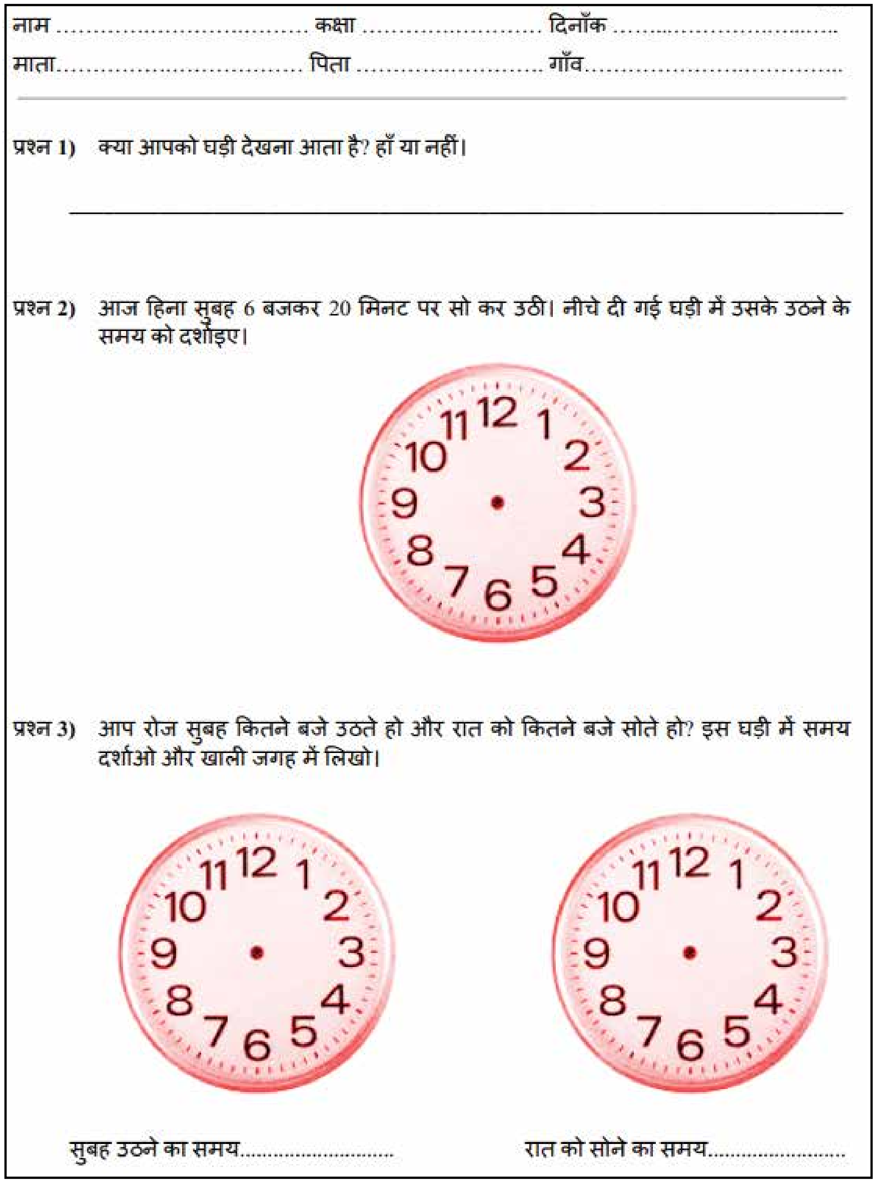
....

....

ऐसी 6 चीज़ों के बारे में सोचो जो तुम एमरजेंसी के लिए अपनी रसोई में रखोगे। चित्र बनाओ और नाम लिखो-

....	....
....	....
....	....

यह वर्कशीट पर्यावरण अध्ययन और हिन्दी को मिलाकर बनाई गई थी ताकि बच्चे महामारी की परिस्थितियों के बारे में सोचें। उन्हें ऐसी छह चीज़ों के चित्र बनाने के लिए कहा गया है जिनकी ज़रूरत उन्हें आपातकालीन समय में पड़ेगी। यह वर्कशीट तरुण समूह के लिए इस्तेमाल की गई थी।



नाम .... कक्षा .... दिनाँक ....

माता.................................. पिता .... गाँव.......................................

प्रश्न 1) क्या आपको घड़ी देखना आता है? हाँ या नहीं।

____

प्रश्न 2) आज हिना सुबह 6 बजकर 20 मिनट पर सो कर उठी। नीचे दी गई घड़ी में उसके उठने के समय को दर्शाइए।

प्रश्न 3) आप रोज सुबह कितने बजे उठते हो और रात को कितने बजे सोते हो? इस घड़ी में समय दर्शाओ और खाली जगह में लिखो।

सुबह उठने का समय.............................

रात को सोने का समय.........................

रोज़मर्रा के जीवन में एक ज़रूरी कौशल है समय की समझ। समय की अवधारणा पर केन्द्रित यह वर्कशीट उमंग समूह के लिए बनाई गई थी।

आभार

लेखिका, वर्कशीट प्रयास का हिस्सा रहे बैरसिया के सभी साथी संचालकों के कामों के लिए धन्यवाद देते हुए उनका आभार व्यक्त करना चाहती हैं। साथ ही, इस लेख को लिखने में मदद करने के लिए वे अरविन्द सरदाना, हृदय कान्त दीवान और टुलटुल बिस्वास की भी आभारी हैं।

Endnotes

i मोहल्ला लर्निंग एक्टिविटी सेंटर (एम-एलएसी) ऐसी किसी खुली और हवादार जगहों पर चलाए जाते हैं जहाँ उस मोहल्ले और आसपास के बच्चे संचालकों (स्थानीय युवा) से अँग्रेज़ी, हिन्दी और गणित सीखने आ सकते हैं। यहाँ पर सभी सुरक्षा नियमों का पालन किया जाता है। *कोविड-19* से पहले ये सेंटर स्कूल के प्रांगण में लगते थे और इन्हें *लर्निंग एक्टिविटी सेंटर* कहा जाता था।



लोविस साइमन एकलव्य फ़ाउण्डेशन के कम्युनिटी एंगेजमेंट एंड एजुकेशन एवं टीचर एजुकेशन, आउटरीच, एडवोकेसी (CE&E एवं TEOA) कार्यक्रमों में बतौर रिसर्च एसोसिएट काम कर रहीं हैं। वे अँग्रेज़ी भाषा की पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्र पर काम करती हैं। उन्होंने अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, बेंगलूरु से शिक्षा में एमए किया है। उनसे lovis.simon17_mae@apu.edu.in पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** अपूर्वा राजे